

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
एम्. ए. हिंदी (द्वितीय वर्ष)
सत्र – ३
परीक्षा : दिसंबर – २०२४
विषय : आधुनिक काव्य (भाग-१) (HDS - 301)

दि.: ०२/१२/२०२४

कुल अंक : १००

समय : प्रातः १०.०० से दो. १.००

सूचनाएँ : १) किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

२) सभी प्रश्नों के लिए समान (२०) अंक हैं।

- प्र. १ 'कामायनी' महाकाव्य की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए।
- प्र. २ 'कामायनी' महाकाव्य के आधारों को स्पष्ट करते हुए, इस काव्य की विशेषताओं को सोदाहरण लिखिए।
- प्र. ३ 'कामायनी' महाकाव्य की सर्ग योजना पर प्रकाश डालिए।
- प्र. ४ 'कामायनी' महाकाव्य की कलापक्ष एवं भाव पक्ष पर प्रकाश डालिए।
- प्र. ५ 'संशय की एक रात' खंडकाव्य की कथावस्तु को लिखकर, उसमें हनुमान की चरित्र योजना का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
- प्र. ६ 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में चित्रित समस्याओं पर सविस्तार प्रकाश डालिए।
- प्र. ७ 'संशय की एक रात' खंडकाव्य के पात्रों की विशेषताओं को विशद कीजिए।
- प्र. ८ 'संशय की एक रात' खंडकाव्य में प्रभु रामचंद्र जी के मन को विचलित करनेवाले प्रश्नों का विवेचन कीजिए।
- प्र. ९ निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए ।
१. विश्व की दुर्बलता बल बने,
पराजय का बढ़ता व्यापार
हँसाता रहे उसे सविलास,
शक्ति का क्रीड़ामय संसार।
२. समरस थे जड या चेतन
सुंदर साकार बना था,
चेतनता एक विलसती,
आनंद अखंड घना था।
३. यह सेतु बंध का बनना
रहता मात्र कल्पना।
रामेश्वर तट एकत्र न होते,
यह नग्न देह के कोटि-कोटि साधारण जन!
४. ओ मेरे विवेक,
मुझसे मत प्रश्न करो,
संशय की बेला अब नहीं रही।
- प्र.१० निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए।
१. 'कामायनी' में प्रलय-वर्णन
२. इड़ा का चरित्र चित्रण
३. लक्ष्मण का चरित्र
४. 'संशय की एक रात' खंडकाव्य का अंत